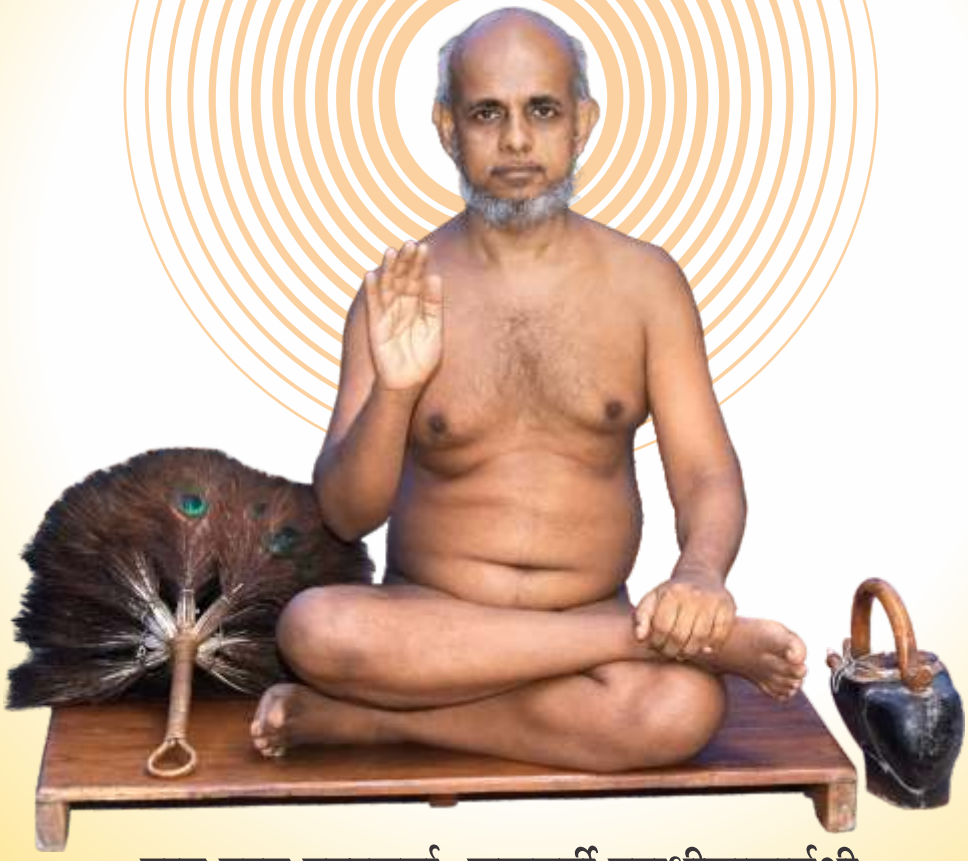

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री महावीर विधान

रचनाकार : मुनिश्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक : धर्म प्रभावना सदन, सागर (मध्यप्रदेश)

(परम्परानायक)

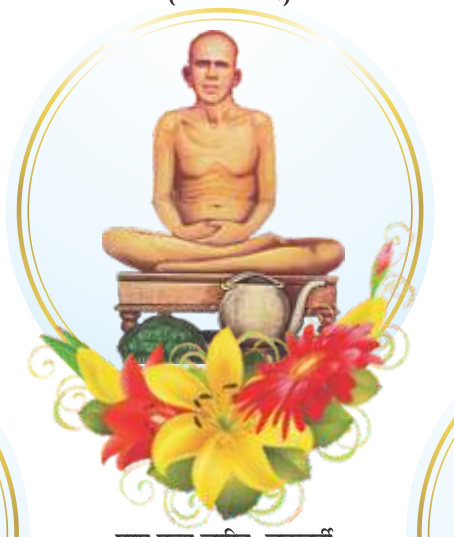

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री महावीर विधान

लेखक

मुनिश्री 108 सुव्रतसागरजी महाराज

सम्पादन

ब्र. जिनेश मलैया

प्रधान सम्पादक – संस्कार सागर मासिक पत्रिका, इन्दौर

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 0731-2571851, मो.: 8989505108

- श्री महावीर विधान
- लेखक – मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज (प्रधान सम्पादक-संस्कार सागर, इन्दौर)
- सम्पादक – ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान सम्पादक-संस्कार सागर, इन्दौर)
- प्रथम आवृत्ति – 2013
- संस्करण : 1100

प्रकाशक : **श्री दिगंबर जैन युवक संघ**
केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 2571851, मो.: 8989505108

प्राप्ति स्थान

1) **श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर**
विद्यासागर नगर, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास
ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.) 0731-2571851, मो.: 9303137091

2) **ब्र. जयकुमार 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य**
पं. मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
पुष्प भवन – टीकमगढ़ (म.प्र.) फोन : 07683-243138

3) **अरिहंत साहित्य सदन**
4, रेनबो विहार, मेरठ रोड़, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
फोन : 0131-2433257

4) **गजेन्द्र ग्रंथमाला**
2578, धर्मपुरा, दिल्ली-6,
मोबाईल : 098100-35356

5) **अमर ग्रंथमाला**
श्री दि. जैन उदासीन आश्रम, एम.जी. रोड़, इन्दौर
फोन : 094254-78846

न्यौछावर राशि : दस रुपये मात्र

मुद्रक : **मोदी प्रिन्टर्स,** 76-बी पोलोग्राउण्ड इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पत्रिका प्रेस के पीछे, इंदौर
(मो. 98260-16543)

*सर्वाधिकार सुरक्षित प्रकाशकाधीन

श्री महावीर विधान प्रारंभ

स्थापना

जय महावीर - जय महावीर।

शासननायक - जय महावीर –2 ।।

(ज्ञानदय छन्द - लय -मेरी भावना)

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले ।।
जियो और जीने दो सबको समझ बूझकर अपनायें।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाये ।।
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आये मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी ।।
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो ।।

जय महावीर - जय महावीर।

शासननायक - जय महावीर –2 ।।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणं। पुष्पांजलि क्षिपेत

यह दुनिया तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे ।।
अर्पण यह जल मिले कृपा जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो।।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों।।

अर्पण चंदन त्रिशलानंदन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाये शिव पद पायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बने हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में बसता॥
पुष्प चढ़ाये काम नशायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटें नैवेद्य चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनू ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
बस छोटा सा दीप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक तप बिन राख हुये पर, कर्म झुलस भी ना पाये।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आये॥

जगत भूप को धूप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो ।
वीर ! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो ।।

ॐ ह्रीं शाससननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही ।
हमें वहीं संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाये हम फल भी ।।
मिले मोक्ष फल, अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो ।
वीर ! बाल यति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो ।।

ॐ ह्रीं शाससननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी ।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी ।।
ओंस बूंद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो ।
हम तो अर्घ चढ़ाये सादर, नजर दया की तुम कर दो ।।

ॐ ह्रीं शाससननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

।। पंचकल्याणक अर्घ्य ।।

(गर्भकल्याणक अर्घ्य)

षष्ठी शुक्ल आषाढ़ की, तज अच्युत सुर धाम ।
माँ त्रिशला के गर्भ में , आये वीर महान ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठयां गर्भ कल्याणक मण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पर्द प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(जन्मकल्याणक अर्घ्य)

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश ।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किये सुरेश ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक मण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पर्द प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(तपकल्याणक अर्घ्य)

मगसिर दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार ।
बनें तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार ।।

ॐ ह्रीं मगसिर कृष्णदशम्यां तपकल्याणक मण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पर्द प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(केवलज्ञानकल्याणक अर्घ्य)

दसें शुक्ल वैसाख को, पाया केवलज्ञान ।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ल दशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पर्द प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोक्षकल्याणक अर्घ्य)

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व ।
पावापुर से मोक्ष जा, दिये दिवाली पर्व ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण अमावस्यायां मोक्षकल्याणकमण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पर्द प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

विष्णु छन्द

(लय : बड़ी बारह भावना – कहाँ गये चक्री...)

बार बार नर जीवन पाके, व्यर्थ गवाँ डाले ।
हे प्राणी ! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले ।।
भाव भक्ति से गद् गद् होकर, प्रभु से नेह लगा ।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा ।।1।।
जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इन्द्र हुआ ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ ।।
वीर ! ज्ञान से जान, मेरु को, दबा दिये थोड़े ।
रखा इन्द्र ने वीर नाम तब, पूजन की दौड़े ।।2।।
जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके ।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके ।।
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुयी ।
नाम आपका वर्द्धमान तब, रखकर खुशी हुयी ।।3।।
दो मुनि चारण ऋद्धिधारी, जिज्ञासा लाये ।
तत्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाये ।।
औरखुशी से नाम आपका, सन्मति रख डाले ।
धन्य ! धन्य ! हे त्रिशला नंदन ! सबके रखवाले ।।4।।

खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे ।
संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे ।।
सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर ।
महावीर तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर ।।5।।
हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा ।
इसे वीर ! वश.करने निकले, ''माना नहीं कहा'' ।।
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला ।
तभी नाम अतिवीर आपका, जग ने रख डाला ।।6।।
पाँच-पाँच नामों के धारी, शासन नायक हो ।
जय हो ! जय हो ! नाथ आपकी, सबके पालक हो ।
पंचम गति का हमें लाभ हो, ऐसी करो कृपा ।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा ।।7।।
बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें ।।
बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली ।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली ।।8।।

(दोहा)

भक्त सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान ।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान ।।

जय महावीर - जय महावीर ।
शासननायक - जय महावीर –2 ।।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

शान्ति-शान्ति धारा करे, करेशांति चहुँ ओर ।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त कमल के भोर ।।

।। शान्तये ...शांतिधारा..... पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

(पूजन समाप्तं)

विधान - अर्घ्यावली

॥ ज्ञानोदय छन्द - लय - मेरी भावना ॥

1. आहार संज्ञा

भोजन संज्ञा के वश होकर, भक्ष्य-अभक्ष्य सभी खाते ।
व्यथा कथा के चक्कर में हम, ज्ञानामृत ना चख पाते ॥
भूख प्यार का पाप हरें हम, यों ज्ञानामृत दान करो ।
वीर ! हमारी अर्जी सुनकर, भोजन संज्ञा हान करो ॥

ॐ ह्रीं पापमूल आहार संज्ञा विनाशन समर्थ श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. भय संज्ञा

सात भयों से डरकर हम सब, डर-डर कर आधे जीते ।
डर-डर कर ही आधे मरते, जहर गुलामी का पीते ॥
सात भयों के शूल हरें हम, सुख का राज्य प्रदान करो ।
वीर ! हमारी अर्जी सुनकर, भय संज्ञा का हान करो ॥

ॐ ह्रीं परतंत्रता भय संज्ञा विनाशन समर्थ श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3.मैथुन संज्ञा

मैथुन संज्ञा से जल करके, दुख सहते अपयश पाते ।
आतम बगिया जले, खिले ना, ब्रह्मचर्य का यश पाते ॥
मैथुन का संताप हरें हम, संयम पथ वर दान करो ।
वीर ! हमारी अर्जी सुनकर, मैथुन संज्ञा हान करो ॥

ॐ ह्रीं परेशानी मूल मैथुन संज्ञा विनाशन समर्थ श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. परिग्रह संज्ञा

परिग्रह संज्ञा - साँप डसे तो, पापों का फिर खेल हुआ ।
राजा - रंक बने यह दुनियाँ, बध बंधन का जेल हुआ ॥
साँप परिग्रह का विष उतरे, गरुण मंत्र यों दान करो ।
वीर ! हमारी अर्जी सुनकर, परिग्रह संज्ञा हान करो ॥

ॐ ह्रीं पंच परिवर्तन मूल परिग्रह संज्ञा विनाशन समर्थ श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. कृष्ण लेश्या

बैर तजे ना क्रोधी लंपट, दया धर्म से मुकर रहा ।
क्रूर दोगला झगड़ालू जो, पेड़ जड़ो-मय कुतर रहा ।।
भाव कृष्ण लेश्या काली ये, नीच नरक गति पहुँचाये ।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं लेश्या सम्बन्धी दुर्भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. नील लेश्या

चुगलखोर अति सोने वाला, संज्ञाओं का लोलुप जो ।
अति लोभी जो तना तोड़ के, फल खाने का इच्छुक हो ।।
भाव नील लेश्या नीली ये, मध्य नरक गति पहुँचाये ।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं नीललेश्या सम्बन्धी दुर्भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. कापोत लेश्या

क्रोध जलन अपमान अन्य का, निंदक ना विश्वास करे ।
निजी प्रशंसक को धन देता, शाखा बड़ी विनाश करे ।।
रंग कबूतर सी कापोती उपरिम नरकों ले जाए ।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं कोपोतलेश्या संबंधी दुर्भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. पीत लेश्या

दया दान में रत मृदुभाषी, कार्य हिता-हित पथ जाने ।
दृढ़ताधारी उपशाखा को, तोड़े फल खा सुख माने ।।
भाव पीत लेश्या पीले ये, निम्न सुरों में पहुँचाये ।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं पीतलेश्या संबंधी भाव प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. पद्मलेश्या

क्षमा शील सच्चा त्यागी जो, साधुजनों का पूजक हो ।
भद्र श्रेष्ठ कार्यों का कर्त्ता, तोड़ फलों का भक्षक हो ।।

भाव पद्म लेश्या नारंगी, मध्य सुरों में पहुँचायें ।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं पद्मलेश्या संबंधी भाव प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. शुक्ललेश्या

पक्षपात अघ राग द्वेष का, नेह निदानों का त्यागी ।
दोष न देखे शिवप्रेमी जी, गिरे फलों का अनुरागी ।।
भव शुक्ललेश्या उज्जवल जो, उच्च सुरों में पहुँचाये ।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आये ।।

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्या संबंधी भाव प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. पहला मिथ्यात्व गुणस्थान

मोह योग के निमित्त से जो, आतम के परिणाम गुनो ।
गुणस्थान वे चौदह उनमें, पहला है मिथ्यात्व सुनो ।।
जो मिथ्यात्व कर्म उदयों से, तत्वों में श्रद्धान नहीं ।
देवशास्त्र गुरु को ना माने, अपने पर का भान नहीं ।।

दोहा

मिथ्या दुख का मूल है, जैसे चुभे बबूल ।
वीर ! हमारा दुख हरो, दो श्रद्धा का फूल ।।

ॐ ह्रीं समस्त विध दुःख दरिद्रता मिथ्यात्व भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. दूसरा (सासादन सम्यक्तव) गुणस्थान

पहले या दूजे उपशम के, उच्च शिखर से गिरकर के ।
जब तक ना मिथ्या तल पाते, तीव्र कषायोदय धर के ।।
वो सासादन सम्यग्दर्शन, उपशम समदृष्टि पाते ।
सब भव्यों को इसका पाना, नहीं जरूरी गुरु गाते ।।
सासादन मिथ्यात्व को, करिए दूर जरूर ।
वीर ! हमारी अर्ज को, शीघ्र करो मंजूर ।।

ॐ ह्रीं समस्त विध पतन-दायक सासादन सम्यक्तव भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. तीसरा (मिश्र सम्यग्मिथ्यात्व) गुणस्थान

यथा स्वाद खिचड़ी का अथवा, मिले दही गुड़ का होता।
त्यों मिथ्या वा सम्यकदर्शन, मिलकर तत्व विषय खोता।।
यह सम्यक्-मिथ्यात्व नाम का, गुणस्थान या मिश्र कहा।
मरण न इसमें आयु बन्ध ना, यहाँ न संयम पले कदा।।
मिश्रभाव स्वामी हरो, शुद्ध भाव दो दान।
वीर ! हमारी प्रार्थना, स्वीकारों भगवान।।

ॐ ह्रीं समस्त विध मिश्र दशादायक सम्यग्मिथ्यात्व भाव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. चौथा (अविरत सम्यग्दर्शन) गुणस्थान

दे वशास्त्र गुरुओं पर श्रद्धा, तत्व विषय श्रद्धान जहाँ।
सुनो ! क्षयोपशम उपशम क्षायिक, तीनों है श्रद्धान जहाँ।।
पर व्रत संयम वहाँ नम होते, अविरत सम्यग्दर्शन वो।
गुणस्थान चौथा बतलाया, चौ-गति में हो भव्यन को।।
रत्नत्रय की नींव है, मोक्षमहल सोपान।
वीर ! हमें वह दीजिए, सम्यग्दर्शन यान।।

ॐ ह्रीं समस्त विध दोष नाशन समर्थ सम्यग्दर्शन प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. पाँचवा (संयमासंयम/देशविरत) गुणस्थान

जो श्रावक त्रस हिंसा तजते, तो संयम स्वीकार रहे।
तज न सकें पर थावर हिंसा, तभी असंयम धार रहे।।
नर पशु गति में साथ-साथ में, ऐलक क्षुल्लक आर्याजी।
गुणस्थान वह देशविरत या, धरे संयमा-संयम भी।।
देशविरत से पाइए, सोलह सुर तक धाम।
वीर ! भक्ति से वह मिले, बाद मिले शिव धाम।।

ॐ ह्रीं गुण धन मण्डित देशविरत दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. छटवाँ (प्रमत्त विरत) गुणस्थान

प्राणी संयम इन्द्री संयम, जहाँ रहे पापों पर जय।
वहाँ सकल संयम हो लेकिन, नहीं संज्वलन मन्द उदय।।

तभी प्रमाद कहा मुनियों को, गुणस्थान वह छटा कहा।
प्रमत्त विरत उसी को कहते, प्रज्ञा का अपराध रहा ॥
परमेष्ठी का रूप है, मुक्ति रमा का द्वार।
वीर ! वही मुनि रूप दो, यथाजात सुख द्वार ॥

ॐ ह्रीं समस्त विध भ्रान्ति-क्लांति नाशक प्रमत्तविरत रूप परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. सातवाँ (अप्रमत्तविरत) गुणस्थान

जहाँ संज्वलन कषाय का भी, मन्द उदय का पड़ जाना।
प्रमाद का तब लेश न रहता, वही अप्रमत्त गुणमाना ॥
भेद सातिशय स्वस्थानमय, क्रिया ध्यान वाला रहता।
गुणस्थान वह सप्तम माना, ऐसा जिन आगम कहता ॥
गुणस्थान सप्तम मिले, क्रिया ध्यान का कोश।
वीर ! वही मुनि रुप दो, सावधान संतोष ॥

ॐ ह्रीं समस्त विध प्रमाद(आलस्य) नाशक अप्रमत्तविरत रूप शुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. आठवाँ (अपूर्वकरण) गुणस्थान

भिन्न समयवर्ती जीवों के, जहाँ भिन्न परिणाम रहे।
किन्तु समयवर्ती जीवों के, भिन्न अभिन्न सुकाम रहे ॥
मिले न पहले भाव अपूरब-भाव अपूरब यथा धरे।
गुणस्थान वो अपूर्व करण जो, उपशम क्षायिक व्यथा हरे ॥
गुणस्थान अष्टम मिले, क्षायिक वाला धाम।
वीर ! वही मुनि रूप दो, जिसको सदा प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं समस्त विध भूत दोष नाशक अपूर्व करण रूप शुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. नौवाँ (अनिवृत्तिकरण) गुणस्थान

भिन्न समयवर्ती जीवों के, भिन्न-भिन्न परिणाम जहाँ।
एक समयवर्ती जीवों के, समान ही परिणाम यहाँ ॥
आगे-आगे नन्त गुणी जो, बढ़े विशुद्धि करणों की।
गुणस्थान वह नौवाँ होता, हो पूजा मुनि चरणों की ॥

गुणस्थान नौवाँ मिले, क्षायिक वाला योग।
वीर ! वही मुनि रूप दो, शुद्ध करो संयोग ।।

ॐ ह्रीं अशुद्धि दोष नाशक अनिवृत्तिकरण रूप शुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. दसवाँ (सूक्ष्म साम्पशय) गुणस्थान

उदय जहाँ संज्वलन लोभ का, बहुत-बहुत अति सूक्ष्म हुआ।
वहाँ संत के परिणामों से, छोटा दुख का कूप हुआ ।।
क्षायिक या उपशम वाला जो, नाश कषायों का करता।
गुणस्थान वो दसवाँ जानो, जो आतम में सुख भरता ।।
गुणस्थान दसवाँ मिले, क्षायिक वाला भाव।
वीर ! वही मुनि रूप दो, जो नाशे दुर्भाव ।।

ॐ ह्रीं लघुता भाव नाशक सूक्ष्म साम्परायरूप शुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. ग्यारहवां (उपशांत मोह) गुणस्थान

चरित मोह के ज हाँ कर्म सब, उपशम हो अथवा दबते।
यथाख्यात चारित्र वहाँ पर, होता यह जिनवर कहते ।।
पतन यहाँ से निश्चित होता, उपशम श्रेणी अंत यहाँ।
गुणस्थान उपशान्त मोह वह, टिक न सकता संत जहाँ ।।
गुणस्थान उपशान्त जो, उपशम करे कषाय।
वीर ! उसी मुनि रूप को, माथा जगत नवाय ।।

ॐ ह्रीं उपद्रव भावनाशक उपशान्त रूप विशुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. बारहवाँ (क्षीण मोह) गुणस्थान

चरित मोह का जहाँ कर्म फल, पूरा क्षय अत्यन्त हुआ।
वहाँ शुद्ध निर्मल अविनाशी, यथाख्यात चारित्र हुआ ।।
फटिकमणी-सम भाव वहाँ पर, अंत क्षपक श्रेणी का हो।
क्षीण मोह या बारहवाँ वह, गुणस्थान आतम का हो ।।
गुणस्थान जो बारहवाँ, क्षीण मोह विख्यात।
वीर ! वही मुनि रूप दो, जो प्रभु रुप दिलात ।।

ॐ ह्रीं विध मूर्च्छानाशक क्षीण मोहरूप विशुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. तेरहवाँ (सयोगकेवलि) गुणस्थान

सकल घातिया नशे जहाँ पर, नन्त चतुष्टय प्रकट हुए।
वह अरिहन्त दशा जग पूजित, भाव सयोगी घटित हुए॥
यही केवलि प्रभु के हो जो, मोक्ष मार्ग दे भव्यों को।
सयोग केवलि गुणस्थान या, तेरहवाँ हो पूज्यों को॥
गुणस्थान तेरवाँ मिले, सयोगकेवलि भूप।
वीर! वही मुनि रूप दो, जो अरहन्त स्वरूप॥

ॐ ह्रीं दुःख संयोग विनाशन समर्थ सयोगकेवलि रूप परम विशुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. चौदहवाँ (अयोगकेवलि) गुणस्थान

जब अरिहन्त प्रभु के तीनों, योग नशे पर देह रहे।
पाँच लघु स्वर के वाचन के, समय मात्र भव गेह रहे॥
केवलज्ञान सहित भावों मय, जो अरिहन्त जिनेश्वरजी।
अयोगकेवलि गुणस्थान या, चौदहवाँ पूजे सुर भी॥
गुणस्थान जो चौदवा, अयोगकेवलि सार।
वीर! वही मुनि रूप दो, जो सिद्धों का द्वार॥

ॐ ह्रीं संसार चक्र विनाशन समर्थ अयोगकेवलि रुप परम विशुद्ध परिणाम प्राप्तये श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. पूर्णार्घ्य

इस दुनिया में कोई न अपना, किससे अपनी बात कहें।
कहाँ रहें किसको अपनायें, किसको अपने साथ रखें॥
यही सोच हम द्वार आपके, विनय भक्ति से आए हैं।
हमको बस अपना लो स्वामी, अर्घ भाव मय लाये हैं॥
स्वयं सिद्ध प्रभु वीर हो, करो सिद्ध हर काम।
मुक्ति वरण को हम करें, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमोनमः॥

समुच्चय जय माला

दोहा - वर्द्धमान सार्थक रहा, विश्वविजेता नाम।
वर्द्धित गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम ।।

(ज्ञानोदय छन्द लय -मेरी भावना)

जय हो! जय हो! महावीर की, जय हो! जय हो! सन्मति की।
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जय हो! जय हो! जगपति की।।
पथ पाथेय तुम्हीं हो स्वामी, पथ दर्शक हो पथ ज्योति।
तुम्हीं रतन चिंतामणि साँचे, तुम ही हो हीरा-मोती ।।1।।

तुम्हीं कहाते त्रिशला नन्दन, सिद्धारथ के सुत प्यारे।
बने भील से भगवन्, तुम ही भक्तों के नैया तारे ।।
राग त्याग वैराग्य धार के, किये साधना कल्याणी।
भक्त वही वह पार पहुँचते, जो अपनाते तव-प्राणी ।।2।।

लेकिन हम तो तुम्हें भूल के, भवसागर में डूब रहे।
राग द्वेष अज्ञान मोह से, पापों से ना ऊब रहे ।।
नफरत ईर्ष्या तृष्णा माया, बस इनमें ही उलझ रहे।
अपना वैभव भूल इन्हीं को, सर्व हितैषी समझ रहे ।।3।।

तभी ताकते रहते नयना, बुरे-बुरे गुण औरों के ।
कान हमारे कभी न थकते, सुन-सुन अवगुण गैरों के ।।
पाँव हमारे उल्टे पड़ते, बुरे काम ही हाथ करें ।
हृदय शीश तन मन वचनों से, बुरी-बुरी हम बात करें ।।4।।

अतः विश्व बन गया नरक सा, मौसम के तेवर बदले।
दोष किसे हम दें हम ही तो, हंस बने कपटी बगले ।।
बस इससे ही सुंदर जीवन, भरा बुराई से अपना।
अब कैसे साकार यहाँ हो, बतलाओं सुख का सपना ।।5।।

अतःविश्व को रही जरूरत, महावीर की सदा-सदा।
लेकिन आप नहीं आओगे, भक्तों की सुन व्यथा-कथा ।।
तभी आपकी पूजा अर्चा, करने की हमने ठानी।
भाव यही है हम सब पायें, छाँव आप की वरदानी ।।6।।

गर तस्वीर बसे नयनों में, तो तकदीर बदल जायें ।
अगर आप मन में आओ तो, महावीर हम बन जायें ।।
कान हमारे धन्य बनें जब, महावीर की कथा सुनें ।
हाथ पैर सिर पावन हों जब, महावीर की राह चुनें ।।17।।

महावीर का रूप धरें, हम महावीर की जय बोलें ।
रोज दशहरा मनें दिवाली, मोक्ष महल के पट खोलें ।।
भक्त भक्ति को अमर बना दो, श्रद्धालय में आकर के ।
''सुव्रत'' का संसार बदल दो, सिद्धालय दिलवाकर के।।8।।

(दोहा) महावीर का नाम ही , करे विश्व कल्याण।
जीवन का निर्माण कर, करवाता निर्वाण।।

जय महावीर - जय महावीर। शासननायक - जय महावीर–2।।

ॐ ह्रीं शासननायक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं नर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा) महावीर स्वामी करें , विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुकजल की धार दे, हम पूजत भगवान।।

(शान्तये... शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय ।
भव दुःखों को मेट दो, महावीर जिनराय ।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(प्रशस्ति)

।।स्थान क्षेत्र समय परिचय।।

विद्या गुरु आशीष में, पद्मसिन्धु मुनि मीत ।
मुनि सुव्रतसागर लिखे, महावीर के गीत ।
प्यारी पन्द्र जनवरी, दिवस रहा शनिवार ।
दो हजार ग्यारहा रहा, मिले मोक्ष का द्वार ।।
नगर ललितपुर में हुआ, गजरथ बड़ा महान ।
झण्डा रोहण के दिवस, पूरा हुआ विधान ।।
भक्ति शक्ति से जो करें , होकर भाव विभोर ।
महावीर बन वो चले, मोक्ष महल की ओर ।।

।।इति शुभंभूयात्।।